भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-7, वार्षिक अंक: 10-11	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी	वार्षिक चन्दा-10.00
शुक्रवार, 25 नवं. ' 83	मानद सहसम्पादक: डॉ. महेन्द्र दवे-श्री विमल दवे	प्रति अंक : 1.00

प.पू. काकाजी की विदेश कल्याणयात्रा

साढ़े तीन महीने की विदेश की लम्बी कल्याणयात्रा करके, दीवाली से पहले-पहले ही प.पू. काकाजी स्वदेश लौट आये...प.पू. काकाजी की दिव्यमूर्ति के दर्शन से सभी भक्तों के दिल में खुशी की लहर छा गई। प.पू. काकाजी की अच्छी तबियत देखकर तो और भी अधिक आनंद सभी भक्तों को हुआ। सभी के चेहरों पर ऐसी चमक थी कि मानो कुछ खोयी हुई अनमोल चीज मिल गई हो ! जीवन की सच्ची सार्थकता और पूर्णता तो प्रत्यक्ष प्रभु के दर्शन, सेवा, समागम से ही है। सभी भक्तों के दिल गद्‌गद् होकर कह उठे.... अहो ! कैसे प.पू. काकाजी....अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक बच्चे, जवान और वृद्ध के रंग में वह वैसे ही प्रभु की अखंड मस्ती लिये खो जाते हैं।

बम्बई, गुजरात, दिल्ली, पंजाब के अपने सभी केन्द्रों से भाविक भक्तों ने हृदय के अनोखे भाव से अलग-अलग स्वागतसमारोह आयोजित करके गुणातीत समाज के इस विश्वकर्मा और प्राणपुरुष के प्रति अपनी भक्ति अदा करी। प्रत्येक केन्द्र में सबको ऐसा लगा कि युगों के बाद प.पू. काकाजी के दर्शन हुए और उनकी सेवा मिली हो। प्रभु धारण की हुई इस अलौकिक मूर्ति को बस निरखते ही रहो.....ऐसा हरेक का मन करता था।

इस विदेश कल्याणयात्रा की झांकी देते हुए पू. महेन्द्रबापू ने बताया है कि–प्रवास दौरान हम इंग्लैण्ड, बेल्जियम, जर्मनी, स्वीट्‌रजरलैण्ड, इटली, फ्रांस, अमरिका, कनाडा गये और इतनी अधिक उम्र होते हुए भी एक युवक की भांति अद्‌भुत स्फूर्ति से प.पू. काकाजी ने विदेश के भक्तों को सत्संग का लाभ दिया। चौवन तो सत्संग सभायें की। ऐसा प्रतीत होता था कि कई मुमुक्षुओं को खोजकर उन्हें जागृत करने के लिए ही इस दिव्यविभूति ने विदेश की कल्याणयात्रा की है। प.पू. योगीजी महाराज की महिमा का निरन्तर गुणगान....,रोम-रोम में प्रभु की अखंड मस्ती ! वह ही सहज रूप से प.पू. काकाजी की ओर सबको खींच लेती है। बिना तप, व्रत, उपासना, साधना किये केवल भजन मात्र से ही प्रभु-प्राप्ति का अखंड सुख आनंद !!!

प.पू. काकाजी के दर्शन जिस-जिसने भी किये, उसके अन्तर में एक अनोखी सी अनुभूति-अनोखा आनंद प.पू. काकाजी ने महसूस करवा दिया। इटली में एक वयोवृद्ध प्रो. श्री ज्योर्ज ने कहा–''काकाजी कोई सम्प्रदाय के नहीं; हरेक धर्म और हरेक व्यक्ति के हैं...मुझे इनमें जीसस के दर्शन हो रहे हैं।'' ऐसा अनुभव कराना, जिसने सच में भगवान अखंडित रखे हों–उसी का सामर्थ्य है। सच तो यह है कि **स्वयं अमृत हो वही अमृतपान करा सकता है।** अमरिका में ईसाई धर्म पर अधिक ढले एक हिन्दू डॉ. ने प.पू. काकाजी के सम्पर्क में यही महसूस किया कि प.पू. काकाजी को हरेक धर्म के प्रति समभाव है.....प्रभु का सच्चा संत साम्प्रदायिकता के दायरे में बंधकर नहीं रहता है। पू. काकाजी ने इन्हें हिन्दू धर्म की ओर विशेषकर स्वामिनारायण सम्प्रदाय के गुणातीत संतो की प्राणशक्ति (Vatality) और विशिष्टताओं का दर्शन कराया, तब वे भी खूब विचार में पड़ गये और अपने हिन्दुत्व के लिये गौरव महसूस करने लगे !

प.पू. काकाजी जहाँ-जहाँ गये....वहाँ माया ने भी अपना प्रभाव दिखाने की कोशिश करी, परन्तु इस परम भागवत विभूति के पास माया निर्गुण हो गई इतना ही नहीं, प.पू. काकाजी के लिये परम सुखदायिनी बन गई ! जैसे सूर्य का उदय होता है तब अंधेरा चला जाता है वैसे ही साम्प्रदायिक या बिन साम्प्रदायिक गुटों के विरोध में प.पू. योगीबापा का सीधा सरल सिद्धान्त समझाकर जीवन की एक नई दिशा विदेश के भक्तों को दी। प.पू. स्वामिजी ने अमरिका के सभी भक्तों को प.पू. काकाजी के दर्शन, स्पर्श, सेवा और समागम का लाभ लेने दबावपूर्ण अनुरोध किया था। अतः प.पू. काकाजी के अमरिका पहुंचते ही फोन पर फोन आने लगे और सभी का आग्रह इतना अधिक था कि अमरिका में काफी दिन बिताये तब भी कम पड़े।

लंदन अनुपम मिशन के युवकों भी मिलजुल कर प.पू. काकाजी के वचन में ऐसे झुक पड़े कि प.पू. काकाजी अत्यंत राजी हो गये। उन युवकों को बलभरी खूब बातें करीं, आनंद करवाया और आज्ञा स्वरूप से अब अनुवृत्तिस्वरूप में प्रवेश करने इन्हें अनुरोध किया।

12 जून को प.पू. काकाजी का प्राकट्यदिन भी मिशन के युवकों ने खूब उमंग, उल्लास से शानदार ढंग से मनाया। इंग्लेण्ड में दिनुभाई, अश्विनभाई, विठलाणी साहब, विमुबहन आदि सभी ने प.पू. काकाजी को खूब राजी कर लिया। अमरिका में दिनकरभाई, गोविन्दभाई, विष्णुभाई, लोपा बहन, जीतुभाई, अरविंदभाई ने प.पू. काकाजी का खूब लाभ लिया। कुवैत में डॉ. हंसाबहन के नेतृत्व के नीचे इस इस्लामी राज्य में भी चार-पांच छोटी-छोटी सभाओं का आयोजन हुआ, जिसमें करीब 400-500 भारतीय जनों ने प.पू. काकाजी की अनमोल मधुर वाणी का आनंद लिया और आत्म संतुष्टि महसूस करी !

अतएव प.पू. काकाजी की इस विदेशयात्रा को कल्याणयात्रा कहना ही उचित है। गंगा के अमृत से जैसे तृप्ति हो जाती है, वैसे ही प.पू. काकाजी की दिव्य, सौम्य मूर्ति के दर्शनमात्र से ही सब आत्मविभोर हो गये। प.पू. काकाजी की विदेशयात्रा के दौरान वहां के सभी भक्तों ने जो परिश्रम उठाकर सेवा करी है उसके लिये सभी को खूब-खूब धन्यवाद। महाराज, स्वामी और गुणातीत विभूतियां सभी को सदा सर्वदा सुखी करें–यही अंतर की प्रार्थना-अभीप्सा।

★ ★ ★

कुछ नया करके दिखना....

प.पू. काकाजी के विदेश से लौटने पर शरद्पूर्णिमा के परम मंगलकारी दिन प्रत्यक्ष गुणातीतस्वरूपों की सेरे छाया में बम्बई में मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की 199वीं प्राकट्य जयंती खूब धूमधाम से मनायी गई। बम्बई के सभी कार्यकर्ता एवं संतों ने असाधारण उमंग से परिश्रम करके यह सेवा उठाकर प्रत्यक्ष स्वरूपों की अन्तर की प्रसन्नता लूट ली। इतने कठिन संजोगों में भी मिल-जुलकर इस महोत्सव को एक जीवंतप्रेरणा बनाकर कार्य में परिणत करने के लिए पू. कांतिकाका, पू. मणिभाई हरिया, पू. रायशीभाई, पू. धनजीभाई, पू. पोपटभाई, पू. रमेशभाई सोनी, पू. बापू, पू. राजुभाई, पू. विपिनभाई काचलिया, पू. जीवणलाल, पू. बलवंत भाई सोनी आदि ने जो जहमत उठाई वह सभी को शिक्षाप्रद है। प.पू. योगीजी महाराज 1964-1965 के दिनों में कई बार कहा करते थे 'कुछ नया करके दिखाना।' प.पू. काकाजी ने इन परम सत्यस्वरूप विभूति प.पू. योगीबापा के शब्दों को नीचे गिरने ही नहीं दिया और हर मौके पर सत्संग को एक नया मोड़ दिया....मान-अपमान, यश-अपयश, जगत सभी की परवाह किये बिना वह इसमें ही जुट गये।

इतिहास उसका साक्षी है। महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत गुणातीतज्ञान को गुजरात में स्थिर होते 200 साल निकल गये ! प.पू. काकाजी ने 1967 में गुजरात की सीमा लांघकर उत्तर भारत में स्वामिनारायण भगवान का संदेशा फैलाने एक नया अनोखा कदम उठाया और संतों को दिल्ली भेजा ! सूर्य का प्रकाश एक विशेष स्थान, व्यक्ति के लिए नहीं—बल्कि सभी के लिये है—इस उदार भावना से धीरे-धीरे दिल्ली अशोकविहार में एक जीवंत और जागृत केन्द्र का निर्माण किया....और अब उत्तर भारत एवं पंजाब में उसे व्यापकरूप देने एक नयी उमंग से कदम और उठाया !!

शरदपूर्णिमा के महामंगलकारी दिन सवद्दी कलां-पंजाब के भक्तराज दिलिपचंदजी के चि. श्याम एवं बम्बई के नरोत्तमभाई जानी के चि. मनोजकुमार—इन दो शिक्षित युवक साधकों को भागवती दीक्षा देकर स्वामिनारायण सम्प्रदाय के इतिहास में एक अनोखा नया पन्ना जोड़ा। प.पू. योगजी महाराज की अमूल्य वाणी सत्य हुई—'कुछ नया करके दिखाना है' ! समग्र स्वामिनारायण सम्प्रदाय के लिये यह सचमुच एक अनूठा गौरव है कि 200 साल पहले महाराज के समय में पू. स्वरूपानंदस्वामी, पू. आनंदानंदस्वामी और पू. व्यापकानंदस्वामी के बाद पहली बार पंजाब के एक सेवक ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण करके भागवती दीक्षा ली। भक्तराज दिलिपचन्द्र और सवद्दी कलां का नाम स्वर्णअक्षरों से लिखकर इतिहास इस नये प्रस्थान का गौरव अवश्य करेगा। स्वभाव, प्रकृति के आमूलचूल परिवर्तन एवं अत्यंत दुर्लभ एकांतिक भाव की सिद्धि की खूब सुगम एवं सुलभ राह प.पू. काकाजी ने अब उत्तर भारत में भी सभी के लिए स्पष्ट कर दी।

प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और प.पू. स्वामीजी ने इस शुभ अवसर पर नवदीक्षित पू. साधु सर्वेश्वरदास (प.भ. श्याम) एवं पू. साधु स्नेहल जीवन दास (प.भ. मनोजकुमार) को आशीष प्रदान करते हुए कहाः 'बड़े संतों की आज्ञा में दोनों सुहृदभाव से जोड़ में रहोगे तो माया कभी आपको परेशान नहीं कर पायेगी। इन आशीर्वचनों पर यदि विचार करें तो ख्याल आयेगीा ही....अहोहो ! गुणातीत के रूप में कितना भव्य प्रकटीकरण ! ऐसी भगवत्स्वरूप विभूतियों के प्रति केवल सद्भावना रखने मात्र से निर्वासनिक भाव-सुहृद्भाव से मिल-जुलकर रहने से माया परम सुखदायिनी.. कैसी

Regd. No. D (D) 655

अद्‌भुत अनुमप कृपा !!

गुणातीत स्वरूपों की प्रेरणा एवं आशीष से ये नये संत निर्मित बन पाये... और हम सब मिलजुल कर गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज एवं गुरुहरि योगीजी महाराज के संकल्प को सुहृदभाव और निर्दोषबुद्धि से व्यापक बनायें-यही इस मंगल अवसर पर प्रार्थना।

हम सभी ऐसी विभूतियों को प्रसन्न करने हेतु, बिना कहे-अपना मन, बुद्धि, चित्त, अहं को ठुकरा कर उनके उठाए हुए कार्यों में जुट जायेंगे, तो स्थलभेद, जातिभेद, कालभेद, मनभेद, विचारभेद से परे का यह अभेद-अद्वैत गुणातीतज्ञान जो कि अमर, अविनाशी, चैतन्यमय और पुष्टिकारी है ही, वह हमें भी अनुभूतिज्ञान के रूप में प्राप्त होगा ही। सभी को यह दिव्य सुख, शान्ति, आनंद पाने के लिए इन प्रत्यक्ष-स्वरूपों में खो जाना ही पड़ेगा-तो स्व का भाव अपने आप टल जायेगा और स्वरूपभाव में रहते हो जायेंगे।

प्रत्यक्ष गुणातीतस्वरूपों के चरणों में यही प्रार्थना है कि सभी को इस राह पर चलने का खूब बल दें।

☆ ☆ ☆

.....और श्रीजी महाराज ने कहा—

10. जिस भक्त को सत्-असत् का विवेक हो वह तो अपने अवगुणों को जाने और विचार करके उनका त्याग कर दे और संत में या किसी सत्संगी में किंचित् अवगुण भासता हो तो उसे छोड़कर उनके गुणों को ही ग्रहण करना चाहिये। परमेश्वर में तो उसे कोई अवगुण भासे ही नहीं और भगवान तथा संत उसे जो-जो कहें उन्हें परम सत्य मानना चाहिये। और उस वचन में संशय नहीं करना चाहिए। संत कहें कि 'तुम देह, इन्द्रिय, मन, प्राण से अलग हो, सत्य हो, उनको जानने वाला हो और देह आदि सब असत्य हैं—' तो उसे सत्य मानकर सबसे पृथक होकर आत्मरूप से बरते, किन्तु मन के संकल्पों के साथ लीन नहीं होना चाहिये और जिससे अपने को बन्धन हो तथा अपने एकान्तिक धर्म में हानि हो ऐसे पदार्थों तथा कुसंग आदि को परख कर उनसे दूर रहना चाहिये तथा उनके चक्कर में ना पड़े। एवं सीधे विचार को ग्रहण करके उल्टे विचार का त्याग कर देना चाहिये। इस प्रकार का आचरण जिसमें हो उसके संबंध में समझना चाहिये कि उसमें विवेक है। गढ़डा प्रथम प्रकरण-16

सोमवार, 5 दिसं. 1819

(क्रमशः)

व्रतोत्सवसूची

1. दि.	30.12.83	शुक्रवार	सफला एकादशी, व्रत
2. दि.	12.1.84	गुरुवार	नवमी, श्री हरिजयंती
3. दि.	14.1.84	शनिवार	मकरसंक्रान्ति
4. दि.	18.1.84	बुधवार	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का भागवती दीक्षादिन

PUBLISED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A-103, Ashokvihar-III, Delhi110052, India. Tel.: 7128838
Prined at R.P. printers, Shahadara, Delhi-110 032